निढारी की माँ का दर्द

निढारी की माँ का दर्द कहीं तुम भूल तो नहीं गये,
एक माँ रो रही है, कहीं तुम भूल तो नहीं गये,
निढारी की माँ.....

वो नरपिशाच यहीं रहता था कहीं,
ढंढोगे तो आज भी मिल जायेगा वो, यहीं कहीं,,
पहले तो मासूम बच्चों का अपहरण किया,
फिर इन दरिंदो ने अपनी हबस की भूख मिटाई,,
जब इससे भी दिल नहीं भरा, तो
पीकर उन मासमों का खून, अपनी शैतानी प्यास बुझाई,,
हर बच्चा था यहाँ बेबस बेसहारा और निहत्ता,
फिर इन आदमखोरों ने बडी बेरहमी से की उनकी हत्या,,
यहाँ आज भी गूंजती हैं उनकी चीख़ पुकार,
हवाओं में आज भी घुला है यहां हाहाकार,,
दम तोड़ती हैं आज भी सिसकियां यहाँ,
हर मोड़पर मिलती हैं शोक मनाती, तितलियां यहाँ
यहीं हुई थी हर इंसानी रिशते की हत्या
कहीं तुम भूलतो नहीं गये, निढारी की....

निढारी आज भी चुनाव में एक मुद्दा नहीं है,
क्योंकि हम गरीबों के पास, वोट बँक नहीं है,,
ये लोग बाहूबली हैं, बहूधनी हैं, बडे रूतवा वाले हैं,,
सरकारी महमान हैं ये, बडे रसूक वाले हैं,
हम गरीबों को इनसे, कौंन दिलायेगा न्याय,,
आखिर हम कबतक सहते रहेंगे, इनका अन्याय,
आज मेरे घर में, कल पड़ौसी के घर में,
तो परसों तुम्हारे घर में होगा,
कोई दुसरी निढारी न बन जाये कहीं,
हमें आजही कुछ करना होगा,
ये कहानी नहीं हक़ीकत है, कहीं तुम.....
निढारी की माँ.....

एक माँने सही थी बेटे की चिता की आँच,
आखिर छीन ही लायी, बेटे के लिये इंसाफ,,
इंसाफ की लड़ाई में, पैसे और रूतवे की हार हुई,,
कमजोर मग़र अड़िग माँ की जीत हुई,,
बेटे को खोने का ग़म तो कभी कम न होगा,
मगर इस जीत से सुकून तो मिला होगा,,
हाँ इस जीत से सुकून तो जरूर मिला,
मगर एक कसक अभी बाकी है,,
इसाफ़ तो मिल गया बेटा, मगर
तेरा आना अभी बाकी है,,
अब तो जागो, कहीं तुम.....
निढारी की माँ का.....
एक माँ रो रही.....
निढारी की माँ की.....

डॉ.लक्ष्मण एस शर्मा
सानपाडा नवी मुंबई
मोबाईल नं.९८६७२७८४९७
rawmagic@gmail.com